विचार बिन्दु

नम्रता और खुदा के खौफ से इज्जत और जिन्दगी मिलती है। –सुलेमान

''भारत-पाक तनाव के बीच राजस्थान की शौर्य सुरभि''

राजस्थान, जिसे वीरों की धरती शौर्य गाथाओं की गगरी कहा जाता है का भारत की सांस्कृतिक, ऐतिहासिक और सैन्य विरासत में अनमोल योगदान है। इसकी रेगिस्तानी माटी ने न केवल कला, संस्कृति और परंपराओं को पोषित किया है, बल्कि युद्ध के मैदानों में भी अपने बलिदान और साहस की अमर गाथाएँ लिखी हैं। भारत और पाकिस्तान के बीच हाल के तनाव, विशेष रूप से अप्रैल 2025 में जम्मू-कश्मीर के पहलगाम में हुए आतंकी हमले ने, राजस्थान की रणनीतिक और सैन्य महत्ता को और अधिक उजागर कर दिया है। इस हमले में 26 लोग मारे गए, जिनमें राजस्थान के नागरिक भी शामिल थे। भारत यह जानता है कि यह सब नापाक काम पाकिस्तान प्रायोजित आतंकवाद का है।

भारत ने त्वरित कार्यवाही करते हुए सिंधु जल संधि को निलंबित कर दिया, राजनयिक संबंधों को और कम किया, और वाघाअटारी सीमा पर गतिविधियाँ रोक दी हैं। पाकिस्तान ने जवाबी कार्रवाई में भारतीय विमानों के लिए अपने हवाई क्षेत्र को बंद कर दिया और व्यापार पर रोक लगा दी। इस तनाव के बीच, राजस्थान की 1,070 किलोमीटर लंबी सीमा, जो पाकिस्तान के साथ सटी है, रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण हो गई है। यह सीमा थार मरुस्थल के रेगिस्तानी इलाकों से होकर गुजरती है और श्रीगंगानगर, बीकानेर, जैसलमेर, और बाड़मेर जिलों को जोड़ती है। यहां के नागरिकों का जोश इस समय उफान पर है। उल्लेखनीय है कि भारतीय सेना में राजस्थान का योगदान लगभग 10 प्रतिशत से अधिक है, जो देश के किसी भी अन्य राज्य की तुलना में सर्वाधिक है। यहाँ के युवा थल सेना, वायु सेना, और नौसेना में अपनी सेवाएँ दे रहे हैं। राजस्थान के नाम को रोशन करती राजपूताना राइफल्स ने अनेक युद्धों में अपनी वीरता का परचम लहराया है।

राजस्थान के अनेक जिले अपनी सैन्य परंपरा और सेना में भर्ती के लिए प्रसिद्ध हैं। इनमें से कुछ जिले ऐसे हैं जहाँ से सबसे अधिक सैनिक भारतीय सेना में शामिल होते हैं। सबसे प्रमुख जिला है सीकर, जो सैनिक भर्ती के मामले में अठाणी है। सीकर के गाँव-गाँव में सैन्य परिवार मिलते हैं, और यहाँ के युवा सेना में भर्ती होने के लिए विशेष प्रशिक्षण लेते हैं। सीकर की मिट्टी में देशभक्ति की भावना गहरी बसी है, और यहाँ के युवा शारीरिक और मानसिक रूप से कठिन सैन्य प्रशिक्षण के लिए तैयार रहते हैं। दूसरा जिला है नागौर, जो सैनिक भर्ती के लिए अपनी मजबूत परंपरा के लिए जाना जाता है। नागौर के जाट समुदाय ने सेना में विशेष योगदान दिया है, और यहाँ के युवा अपनी शारीरिक दक्षता और साहस के लिए प्रसिद्ध हैं। तीसरा जिला है जोधपुर, जो न केवल सैन्य प्रशिक्षण केंद्र के रूप में महत्त्वपूर्ण है, बल्कि यहाँ से भी बड़ी संख्या में सैनिक भर्ती होते हैं। जोधपुर में भारतीय वायुसेना का एक प्रमुख स्टेशन है, जो इस जिले की रणनीतिक महत्ता को बढ़ाता है। चौथा जिला है झुंझुनूं, जिसे शहीदों का जिला कहा जाता है। यहाँ के सैनिकों ने कई युद्धों में अपनी वीरता दिखाई है, और झुंझुनूं के हर गाँव में शहीद स्मारक देखे जा सकते हैं। पाँचवाँ जिला है बीकानेर, जो पाकिस्तान से सटी सीमा के निकट होने के कारण सैन्य गतिविधियों का केंद्र है। बीकानेर के युवा न केवल सेना में भर्ती होते हैं, बल्कि सीमा सुरक्षा बल में भी अपनी सेवाएँ देते हैं। इन जिलों के अलावा, जयपुर, अलवर, और चुरू जैसे जिले भी सैनिक भर्ती में महत्त्वपूर्ण योगदान देते हैं। इन जिलों में सैन्य भर्ती शिविर नियमित रूप से आयोजित किए जाते हैं, जहाँ हजारों युवा भाग लेते हैं। सीकर और झुंझुनूं में विशेष रूप से सैन्य प्रशिक्षण अकादमियाँ हैं, जो युवाओं को सेना में भर्ती के लिए तैयार करती हैं। इन जिलों की सैन्य परंपरा इतनी गहरी है कि यहाँ के युवा बचपन से ही सेना में शामिल होने का सपना देखते हैं।

राजस्थान की सीमा और उसके रणनीतिक महत्त्व को समझने के लिए हमें इसके भौगोलिक और सैन्य परिदृश्य को देखना होगा। राजस्थान की 1,070 किलोमीटर लंबी सीमा पाकिस्तान के साथ सटी है, जो भारत-पाक सीमा के कुल 3,323 किलोमीटर का एक महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। श्रीगंगानगर, जो उत्तरी राजस्थान में स्थित है, पाकिस्तान के बहावलपुर और रहीम यार खान जिलों से सटा है। यहाँ की उपजाऊ भूमि और नहर प्रणाली इसे कृषि के लिए महत्त्वपूर्ण बनाती है, लेकिन सीमा की निकटता इसे सैन्य दृष्टिकोण से भी संवेदनशील बनाती है। बीकानेर का रेगिस्तानी इलाका पाकिस्तान के साथ सीमा बनाता है, और यहाँ बीएसएफ की चौकियाँ हर समय सतर्क रहती हैं। जैसलमेर, जिसे स्वर्ण नगरी कहा जाता है, थार मरुस्थल का हृदय है और पाकिस्तान के साथ सबसे लंबी सीमा साझा करता है। यह जिला रणनीतिक रूप से अत्यंत महत्त्वपूर्ण है, और यहाँ सैन्य अड्डे और वायुसेना के ठिकाने किसी भी स्थिति से निपटने के लिए तैयार हैं। बाड़मेर, अपनी रेगिस्तानी भू-संरचना के साथ, सीमा सुरक्षा का एक और महत्त्वपूर्ण हिस्सा है। इन चारों जिलों में सीमा पर तारबंदी, निगरानी उपकरण, और ड्रोन का उपयोग किया जाता है। बीएसएफ की 31 बटालियनें राजस्थान में तैनात हैं, जो सीमा की सुरक्षा में दिन-रात जुटी रहती हैं। हाल की घटनाओं के बाद पाकिस्तान ने राजस्थान से सटी सीमा पर अपनी सैन्य तैनाती बढ़ाई है, विशेष रूप से बहावलपुर में। यह वर्तमान तनाव की गंभीरता को दर्शाती है। लेकिन भारत-पाक तनावपूर्ण स्थिति में राजस्थान की ऐतिहासिक भूमिका असाधारण रही है।

1947-48 के प्रथम भारत-पाक युद्ध में, जब पाकिस्तान ने कश्मीर पर कब्जे की कोशिश की, राजस्थान के सैनिकों ने जम्मू-कश्मीर में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। उस समय कई राजस्थानी सैनिक ब्रिटिश भारतीय सेना का हिस्सा थे, और उन्होंने कबायलियों और पाकिस्तानी सेना का डटकर मुकाबला किया। 1965 के युद्ध में राजस्थान के सैनिकों ने पश्चिमी मोर्चे पर, विशेष रूप से बीकानेर और जैसलमेर के रेगिस्तानी इलाकों में, पाकिस्तानी टैंकों को धूल चटाई दी थी और उन्हें नष्ट कर दिया था। राजस्थान के मेजर शैतान सिंह ने अपनी अदम्य वीरता दिखाई थी। हालाँकि यह युद्ध चीन के खिलाफ था, उनकी गाथा राजस्थान के अमर सैन्य इतिहास का हिस्सा है। मेजर शैतान सिंह, जैसलमेर के रहने वाले, ने 1962 के भारत-चीन युद्ध में रेजांग ला की लड़ाई में 13 कुमाऊँ रेजिमेंट की सी कंपनी का नेतृत्व किया। चीनी सेना ने भारी संख्या में हमला किया, लेकिन मेजर शैतान सिंह ने अपने सैनिकों को प्रेरित करते हुए अंतिम साँस तक लड़ाई लड़ी। उनकी यूनिट के 120 सैनिकों में से 114 शहीद हो गए, लेकिन उन्होंने 1,300 से अधिक चीनी सैनिकों को मार गिराया। मेजर शैतान सिंह को मरणोपरांत परमवीर चक्र से सम्मानित किया गया, और उनकी मूर्ति जैसलमेर में स्थापित है। उनकी गाथा हर सैनिक के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। 1971 का भारत-पाक युद्ध राजस्थान के सैन्य इतिहास का स्वर्णिम अध्याय है। इस युद्ध में राजस्थान के सैनिकों ने पश्चिमी मोर्चे पर असाधारण साहस दिखाया। सबसे प्रसिद्ध है लोंगेवाला की लड़ाई, जो 4-5 दिसंबर 1971 को लड़ी गई। मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी, जो जैसलमेर में तैनात थे, ने 23 पंजाब रेजिमेंट की एक छोटी टुकड़ी का नेतृत्व किया। पाकिस्तानी सेना ने 2,000 सैनिकों और 40 टैंकों के साथ लोंगेवाला पोस्ट पर हमला किया। मेजर चांदपुरी के पास केवल 120 सैनिक और सीमित हथियार थे। फिर भी, उन्होंने रणनीतिक कौशल और साहस के साथ दुश्मन का सामना किया। रात भर चली लड़ाई में, भारतीय सैनिकों ने पाकिस्तानी सेना को भारी नुकसान पहुँचाया। सुबह भारतीय वायुसेना के हंटर विमानों ने हमला बोलकर पाकिस्तानी टैंकों को नष्ट कर दिया। इस लड़ाई में केवल दो भारतीय सैनिक शहीद हुए, जबकि पाकिस्तान ने सैकड़ों सैनिक और दर्जनों टैंक खो दिए। मेजर चांदपुरी को उनकी वीरता के लिए महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। यह लड़ाई बॉलीवुड फिल्म बॉर्डर में चित्रित की गई और राजस्थान के शौर्य को विश्व पटल पर ले गई।

> **वर्तमान तनाव में राजस्थान की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। पहलगाम हमले के बाद भारतीय सेना ने राजस्थान में युद्धाभ्यास तेज कर दिया है। जैसलमेर और बाड़मेर में सैन्य अड्डे और वायुसेना के ठिकाने किसी भी जवाबी कार्रवाई के लिए तैयार हैं। भारतीय सेना ने राजस्थान में अपनी तैनाती बढ़ाई है, और बीएसएफ की 31 बटालियनें सीमा पर सतर्क हैं।**

1999 का कारगिल युद्ध एक और अवसर था जब राजस्थान के सैनिकों ने अपनी वीरता दिखाई। पाकिस्तानी घुसपैठियों को खदेड़ने के लिए भारतीय सेना ने ऑपरेशन विजय शुरू किया। राजस्थान रेजिमेंट ने टाइगर हिल और तोलोलिंग जैसी दुर्गम चोटियों पर कब्जा किया। इस युद्ध में राजस्थान के कई सैनिक शहीद हुए, जिनमें सिपाही रणजीत सिंह और हवलदार यशवीर सिंह शामिल थे। सिपाही रणजीत सिंह, सीकर के एक गाँव के रहने वाले, ने तोलोलिंग की लड़ाई में दुश्मन की मशीनगन पोस्ट को नष्ट किया, लेकिन इस दौरान वे शहीद हो गए। उनकी वीरता के लिए उन्हें मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया गया। हवलदार यशवीर सिंह, झुंझुनूं के रहने वाले, ने टाइगर हिल पर अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया और दुश्मन की कई चौकियों को नष्ट किया। वे भी इस लड़ाई में शहीद हुए और उन्हें सेना मेडल से सम्मानित किया गया। इन सैनिकों की गाथाएँ राजस्थान के युवाओं को सेना में शामिल होने के लिए प्रेरित करती हैं। राजस्थान के अन्य बलिदानी सैनिकों में सिपाही सागर सिंह का नाम भी उल्लेखनीय है। सागर सिंह, सीकर के एक छोटे से गाँव के रहने वाले, 1965 के भारत-पाक युद्ध में शहीद हुए। उन्होंने पंजाब के खेमकरण सेक्टर में पाकिस्तानी सेना का सामना किया। एक भारी गोलीबारी के दौरान, सागर सिंह ने अपनी टुकड़ी को प्रेरित करते हुए दुश्मन की अग्रिम पंक्ति को तोड़ा। इस लड़ाई में वे गंभीर रूप से घायल हो गए और शहीद हो गए। उनकी वीरता के लिए उन्हें मरणोपरांत वीर चक्र से सम्मानित किया गया। उनके गाँव में उनकी स्मृति में एक स्मारक बनाया गया है, जो स्थानीय युवाओं के लिए प्रेरणा का स्त्रोत है। इसी तरह, झुंझुनूं के हवलदार रामस्वरूप यादव को 1971 के युद्ध में उनकी वीरता के लिए महावीर चक्र से सम्मानित किया गया। उन्होंने पूर्वी पाकिस्तान (अब बांग्लादेश) में एक महत्त्वपूर्ण पुल पर कब्जा करने में अपनी टुकड़ी का नेतृत्व किया। इस ऑपरेशन में वे शहीद हो गए, लेकिन उनकी वीरता ने भारतीय सेना की जीत को सुनिश्चित किया। नागौर के सिपाही भंवर सिंह ने 1999 के कारगिल युद्ध में अपनी जान गँवाकर देश की रक्षा की। उनकी कहानी स्थानीय लोकगीतों में गाई जाती है।

पहलगाम आतंकी हमले ने राजस्थान के लोगों के दिलों में गहरा आघात पहुँचाया है। 22 अप्रैल 2025 को, जम्मू-कश्मीर के अनंतनाग जिले में पहलगाम के बैसरन घाटी, जिसे मिनी स्विट्जरलैंड के नाम से जाना जाता है, में चार आतंकियों ने एक क्रूर हमला किया। इस हमले में 26 लोग मारे गए, जिनमें ज्यादातर पर्यटक थे। आतंकी संगठन लश्कर-ए-तैयबा की शाखा, द रेजिस्टेंस फ्रंट ने इस हमले की जिम्मेदारी ली। आतंकियों ने पीड़ितों से उनके नाम और धर्म पूछे, और कुछ को कलमा पढ़ने के लिए कहा। जो लोग ऐसा नहीं कर सके, उन्हें गोली मार दी गई। इस हमले में राजस्थान के जयपुर निवासी नीरज उधवानी शहीद हो गए। नीरज, एक चार्टर्ड अकाउंटेंट, अपने परिवार के साथ कश्मीर की वादियों में छुट्टियाँ मनाने गए थे। उनकी मृत्यु ने जयपुर और पूरे राजस्थान में शोक की लहर दौड़ा दी। नीरज के पार्थिव शरीर को जयपुर लाया गया, जहाँ मुख्यमंत्री भजनलाल शर्मा, पूर्व मुख्यमंत्री अशोक गहलोत, और अन्य नेताओं ने उन्हें श्रद्धांजलि दी। नीरज की माँ, पत्नी, और परिवार के लिए राजस्थान की सात करोड़ जनता ने अपनी संवेदनाएँ व्यक्त कीं। उनकी शहादत ने एक बार फिर राजस्थान की देशभक्ति और बलिदान की भावना को उजागर किया। हम नीरज उधवानी को विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करते हैं, और प्रार्थना करते हैं कि उनकी आत्मा को शांति मिले। देशभर के शहीदों के परिवारों के प्रति हम गहरी संवेदना व्यक्त करते हैं। उनकी स्मृति में, राजस्थान के कोने-कोने में श्रद्धांजलि सभाएँ आयोजित की गईं।

वर्तमान तनाव में राजस्थान की भूमिका और अधिक महत्त्वपूर्ण हो गई है। पहलगाम हमले के बाद भारतीय सेना ने राजस्थान में युद्धाभ्यास तेज कर दिया है। जैसलमेर और बाड़मेर में सैन्य अड्डे और वायुसेना के ठिकाने किसी भी जवाबी कार्रवाई के लिए तैयार हैं। भारतीय सेना ने राजस्थान में अपनी तैनाती बढ़ाई है, और बीएसएफ की 31 बटालियनें सीमा पर सतर्क हैं। जैसलमेर के सीमावर्ती गाँवों में लोग इस कायरना हरकत का बदला चाहते हैं, लेकिन युद्ध की आशंका से चिंतित भी हैं। राजस्थान में सुरक्षा व्यवस्था को और सुदृढ़ करने के लिए मुख्यमंत्री निवास पर उच्च स्तरीय बैठकें हुईं, और संवेदनशील स्थानों पर निगरानी बढ़ाई गई है। जोधपुर में भारतीय वायुसेना का स्टेशन रणनीतिक रूप से महत्त्वपूर्ण है। राजस्थान की शौर्य पूर्ण सुरभि केवल सैनिकों तक सीमित नहीं है। यहाँ के आम नागरिक भी देशभक्ति की भावना से ओतप्रोत हैं। सीकर, नागौर, जोधपुर, झुंझुनूं, और बीकानेर जैसे जिलों में सैन्य भर्ती के लिए विशेष शिविर आयोजित किए जाते हैं। झुंझुनूं में हर साल शहीद मेले का आयोजन होता है, जिसमें शहीदों की गाथाएँ सुनाई जाती हैं। यहाँ के लोकगीत और कथाएँ सैनिकों की वीरता को जीवंत रखती हैं। उदाहरण के लिए, बीकानेर और जैसलमेर के रेगिस्तानी इलाकों में गाए जाने वाले गीत लोंगेवाला की लड़ाई और अन्य युद्धों की कहानियाँ बयान करते हैं। ये गीत नई पीढ़ी को देशभक्ति और बलिदान की भावना से प्रेरित करते हैं। पहलगाम हमले के बाद, राजस्थान के लोगों ने एकजुटता दिखाई और शहीदों के लिए प्रार्थना की। यह एकता और बलिदान की भावना राजस्थान की पहचान है। राजस्थान की माटी ने शौर्य और बलिदान की ऐसी गाथाएँ लिखी हैं जो देश के इतिहास में अमर हैं। सीकर, नागौर, जोधपुर, झुंझुनूं, और बीकानेर जैसे जिले सैनिक भर्ती के मामले में अग्रणी हैं। मेजर शैतान सिंह, मेजर कुलदीप सिंह चांदपुरी, सिपाही सागर सिंह, और हवलदार रामस्वरूप यादव जैसे वीरों की गाथाएँ राजस्थान की शौर्य पूर्ण सुरभि को और अधिक प्रेरणादायक बनाती हैं।

ऐतिहासिक युद्धों में राजस्थान ने अपनी वीरता का परचम लहराया, और वर्तमान तनाव में इसकी सीमा, सैन्य अड्डे, और सैनिक देश की सुरक्षा के लिए एकजुट हैं। यहाँ की मिट्टी की खुशबू में देशभक्ति और बलिदान की सुगंध बसी है, जो हर युग में भारत को गौरवान्वित करती रहेगी। हम इस तनाव के दौर में भी तनकर खड़े हैं और भारत की समृद्धि और सुरक्षा के लिए राजस्थान अबकी बार भी इतिहास रचेगा।

–अतिथि सम्पादक,
राजेन्द्र मोहन शर्मा,
साहित्यकार, शिक्षाविद और चिन्तक

जनगणना को डिजिटल बनाएं: एक भारत, एक डेटा प्लेटफॉर्म की ओर

सुनील दत्त गोयल

भारत जैसे विशाल और विविधताओं से भरे देश में जनगणना सिर्फ जनसंख्या की गिनती नहीं होती, बल्कि यह देश की सामाजिक, आर्थिक और प्रशासनिक दिशा तय करने का एक सशक्त माध्यम भी होती है। हर 10 वर्षों में होने वाली यह प्रक्रिया लाखों कर्मचारियों और हजारों करोड़ रुपये के बजट के साथ संपन्न होती है। लेकिन क्या अब समय नहीं आ गया है कि इस विशालतम डेटा संग्रह प्रणाली को डिजिटल युग की ओर अग्रसर किया जाए? आज जब बैंकिंग, शिक्षा, स्वास्थ्य, वोटिंग, रेलवे बुकिंग, आधार कार्ड और पासपोर्ट तक की सेवाएं डिजिटल हो चुकी हैं, तब जनगणना जैसी महत्वपूर्ण प्रक्रिया को भी ऑनलाइन और तकनीकी रूप से सक्षम बनाना समय की माँग है।

क्यों जरूरी है डिजिटल जनगणना?

भारत सरकार के पास सैकड़ों विभाग हैं–स्वास्थ्य, शिक्षा, सामाजिक न्याय, महिला एवं बाल विकास, ग्रामीण विकास, नगर निकाय, राजस्व, कृषि, श्रम और रोज़गार, गृह मंत्रालय आदि। इन विभागों को समय-समय पर अलग-अलग सर्वेक्षण, फॉर्म और जनगणनाएँ करनी पड़ती हैं। इससे न केवल संसाधनों की बर्बादी होती है, बल्कि डेटा असंगत और अपूर्ण भी रहता है। यदि एक ही बार में एक विस्तृत डिजिटल जनगणना आयोजित की जाए, तो देश की समस्त सामाजिक और आर्थिक स्थिति का समठा डेटा एक स्थान पर उपलब्ध हो सकता है, जिससे नीतियाँ बनाना, योजनाओं को लागू करना और लाभार्थियों तक पहुंच सुनिश्चित करना अधिक सुगम हो जाएगा।

डिजिटल जनगणना में क्या-क्या जोड़ा जाए?

डिजिटल जनगणना के दौरान नागरिकों से विस्तृत जानकारी मांगी जानी चाहिए, जिससे सरकार की योजनाएं और नीतियां अधिक प्रभावी बन सकें। उदाहरणस्वरूप:–

माता-पिता और पति/पत्नी की राष्ट्रीयता, एकल या दोहरी नागरिकता, धर्म, जाति, उपजाति, पासपोर्ट की स्थिति, ड्राइविंग लाइसेंस, राशन कार्ड एवं उनका स्थाई व वर्तमान निवास का पता – चाहे देश में हो या विदेश में।

बच्चों की जानकारी – वे किसके साथ रहते हैं, उनकी आयु, शिक्षा, और क्या वे देश में हैं या विदेश में।

आवास और संपत्ति विवरण – स्वयं का मकान है या नहीं, कितनी संपत्तियां हैं, क्या वे किराये पर रह रहे हैं या खुद के घर में और उनके स्वामित्व में उपलब्ध वाहनों की जानकारी।

आर्थिक जानकारी – नागरिक की आय का स्त्रोत, वार्षिक आमदनी, व्यवसाय, नौकरी की स्थिति, क्या वह नरेगा या अन्य केन्द्रीय या राज्य सरकारी योजनाओं का लाभार्थी है।

परिवार के सदस्यों की आमदनी – पत्नी, बच्चों की रोजगार की स्थिति एवं संभावित आय भी दर्ज की जानी चाहिए।

सरकारी लाभ और सामाजिक वर्गीकरण – क्या वे पिछड़े वर्ग में आते हैं, अनुसूचित जाति/जनजाति हैं, या किसी अन्य आरक्षित वर्ग के सदस्य हैं।

दिव्यांगता की स्थिति – अगर व्यक्ति दिव्यांग है (पूर्व में जिसे विकलांगता कहा जाता था), तो उसकी स्पष्ट जानकारी भी दर्ज होनी चाहिए।

लिंग विविधता की मान्यता – जनगणना फॉर्म में ट्रांसजेंडर नागरिकों के लिए एक अलग कॉलम अनिवार्य रूप से जोड़ा जाना चाहिए, ताकि इस समुदाय को उचित सम्मान और मुख्यधारा में स्थान दिया जा सके।

एशिया के कई देशों ने ट्रांसजेंडर समुदाय को सम्मानजनक स्थिति दी है। भारत को भी यह दिखाना होगा कि वह अपने सभी नागरिकों को समान अधिकार देता है।

नेशनल सैंपल सर्वे (एनएसएसओ) का एकीकरण

जनगणना प्रक्रिया को एनएसएसओ (नेशनल सैंपल सर्वे ऑफिस) के डाटा इनपुट और सैंपल सर्वे ढांचे से जोड़कर और अधिक प्रभावी बनाया जा सकता है। इससे न केवल आंकड़े बेहतर और वैज्ञानिक होंगे, बल्कि भविष्य की योजनाओं और अनुसंधान कार्यों में भी इसकी उपयोगिता बढ़ेगी। एनएसएसओ द्वारा वर्षों से एकत्रित सैंपल डेटा का मिलान अगर जनगणना के विस्तृत डेटा से हो, तो कई सामाजिक-आर्थिक विसंगतियों का अनुमान लगाया जा सकता है एवं उनका उचित निराकरण भी किया जा सकता है। इन सूचनाओं को पहले से उपलब्ध सरकारी डेटाबेस जैसे, चुनाव आयोग, परिवहन विभाग, और राजस्व विभाग से आंशिक रूप से सत्यापित किया जा सकता है।

संभावित लाभ

1. समग्र नागरिक प्रोफाइल: एक व्यक्ति की शिक्षा, आय, निवास, संपत्ति, दस्तावेज़, व्यवसाय आदि की जानकारी एक जगह संग्रहीत होगी।

2. डिजिटल सिस्टम: सभी सरकारी सेवाओं के लिए अलग-अलग की जरूरत नहीं होगी।

3. सार्वजनिक योजनाओं का लाभ: पात्रता सत्यापन तेज होगा और गलत एवं फ़र्ज़ी लाभार्थियों को रोका जा सकेगा।

4. विभागीय विलय और दक्षता: जैसे लागू होने से 25 से अधिक विभागों का विलय हुआ, वैसे ही डिजिटल जनगणना से दर्जनों सर्वेक्षणों और विभागों को समेकित किया जा सकता है।

5. पारदर्शिता और जवाबदेही: डुप्लिकेट रिकॉर्ड्स, फर्जी लाभार्थियों और अवैध गतिविधियों पर अंकुश लगेगा।

6. नवीन नीतियाँ और योजनाएँ: सरकार को सही जानकारी के आधार पर ज़रूरतमंद क्षेत्रों पर ध्यान केंद्रित करने में मदद मिलेगी।

क्या सब डिजिटल जनगणना भर पाएंगे?

यह एक उचित प्रश्न है कि भारत के कई ग्रामीण और तकनीकी रूप से पिछड़े क्षेत्र अभी डिजिटल साक्षरता से दूर हैं। लेकिन इसका समाधान यह नहीं है कि डिजिटल जनगणना न की जाए, बल्कि इसका हल यह है कि जो नागरिक स्वयं जानकारी भर सकते हैं, वे ऑनलाइन भरें, और जो नहीं भर सकते, उनका डेटा जनगणना ड्यूटी में लगे सरकारी कर्मचारी या अधिकारी भरें।

यह हाइब्रिड मॉडल हमारे देश की विविधताओं को ध्यान में रखते हुए अधिक उपयुक्त और व्यावहारिक होगा। जातिगत जनगणना को भी शामिल किया जाए। जब जनगणना डिजिटल होगी, तो जाति, धर्म, उपजाति, शैक्षिणक योग्यता, पेशा और आय के आंकड़े भी स्वचालित रूप से प्राप्त हो सकेंगे। इससे नीति निर्धारण और आरक्षण की समीक्षा जैसे संवेदनशील विषयों पर पारदर्शी और सटीक निर्णय लिए जा सकेंगे।

सरकार के पास पहले से अनुसूचित जातियों और जनजातियों की सूची है, जिसे जनगणना फॉर्म में ड्रॉपडाउन के रूप में जोड़ा जा सकता है। इससे लोग अपनी जाति से संबंधित जानकारी एकरूपता से भर सकेंगे।

क्या यह सुरक्षित होगा?

डेटा सुरक्षा और गोपनीयता इस प्रक्रिया का मूल हिस्सा होना चाहिए। फॉर्म को एंड-टू-एंड एन्क्रिप्शन, मल्टीफैक्टर ऑथेंटिकेशन, और सिर्फ वैध सरकारी उपयोग के लिए सीमित करना आवश्यक है। साथ ही डेटा का भंडारण भारत के भीतर ही होना चाहिए।

निष्कर्ष– प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी के नेतृत्व में भारत ने डिजिटल इंडिया, जीएसटी, और आधार जैसी ऐतिहासिक पहलें की हैं। अब समय आ गया है कि जनगणना जैसे सबसे बड़े डेटा संग्रह को भी तकनीकी रूप से सक्षम बनाया जाए। हमारा सरकार से आग्रह है कि 2025 या उसके पश्चात होने वाली जनगणना को डिजिटल माध्यम से भी अनिवार्य रूप से संचालित किया जाए। इससे एक ऐसा डेटा बैंक तैयार होगा जो भारत को योजनाओं, पारदर्शिता, जवाबदेही और विकास की नई ऊँचाइयों पर ले जाएगा।

धन्यवाद,

–सुनील दत्त गोयल,
महानिदेशक, इम्पीरियल चैंबर ऑफ़ कॉमर्स एंड इंडस्ट्री
पूर्व उपाध्यक्ष, जयपुर स्टॉक एक्सचेंज लिमिटेड जयपुर, राजस्थान

महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए आवेदन प्रक्रिया जारी

महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए शाला दर्पण पोर्टल के जरिए ऑनलाइन आवेदन किए जा रहे हैं

- **जिन स्कूलों को प्रवेश के लिए शाला दर्पण पोर्टल पर नहीं खोला गया है उनमें प्रवेश नहीं हो रहे हैं**

बीकानेर, (निसं)। महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए ऑनलाइन आवेदन की प्रक्रिया बुधवार से शुरू हो गई। राज्य सरकार की ओर से जिन इंग्लिश मीडियम स्कूलों को बंद करना है या फिर वापस हिंदी मीडियम स्कूलों में रूपांतरित करना है ऐसे स्कूलों में फिलहाल प्रवेश नहीं होंगे।

जानकारी के अनुसार महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश के लिए शाला दर्पण पोर्टल के जरिए ऑनलाइन आवेदन किए जा रहे हैं। जिन स्कूलों को प्रवेश के लिए शाला दर्पण पोर्टल पर नहीं खोला गया है उनमें प्रवेश नहीं हो रहे हैं। हालांकि शिक्षा विभाग ने ऐसे स्कूलों की सूची सार्वजनिक नहीं की है। ऑनलाइन प्रवेश प्रक्रिया शुरू होने से एक दिन पहले 6 मई का माध्यमिक शिक्षा निदेशक का ऑर्डर सोशल मीडिया में वायरल हो रहा है। शिक्षा निदेशक ने एनआईसी के वरिष्ठ निदेशक आईटी को लिखे गए इस आर्डर में उल्लेख किया गया है कि संलग्न सूची के महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में प्रवेश की प्रक्रिया आगामी आदेशों तक स्थगित रहेगी। संलग्न सूची को छोड़कर अन्य महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूल में प्रवेश का कार्यक्रम यथावत जारी रहेगा। संलग्न सूची में किस जिले के कितने स्कूल शामिल है, इसका खुलासा फिलहाल शिक्षा विभाग की ओर से नहीं किया गया है। उधर, बीकानेर जिले के 171 महात्मा गांधी इंग्लिश मीडियम स्कूलों में से अधिकांश स्कूल शाला दर्पण पोर्टल पर प्रवेश के लिए खोले गए हैं।

नाबालिग का बाल विवाह रूकवाया

जालोर, (कासं)। जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जालोर ने शंखवाली में आयोजित हो रहे एक नाबालिग बालक का बाल विवाह रुकवाया।

जिला विधिक सेवा प्राधिकरण जालोर को सूचना मिली कि शंखवाली गांव में जोइताराम अपनी बालिग पुत्री के साथ साथ नाबालिग पुत्र की भी शादी कर रहा है। शादी की तारीख छह मई निश्चित की गई है। जिस पर जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से सूचना पर तुरंत संज्ञान लेते हुए संबंधित प्रशासनिक अधिकारियों, पुलिस अधिकारियों को सूचना की जांच कर नाबालिग बालक का बाल विवाह रुकवाने के निर्देश दिए। निर्देश पर पुलिस अधिकारी मौके पर पहुंचे और नाबालिग बालक के पिता को नोटिस देकर बाल विवाह नहीं करने के लिए पाबंद किया। निर्देश पर उपखंड मजिस्ट्रेट आहोर भी मौके पर पहुंचे। तहसीलदार भाद्राजून ने जोइताराम को अपने पुत्र जिसकी उम्र 18 साल है, कि शादी निर्धारित आयु पूरी नहीं होने तक नहीं करने के लिए पाबंद किया। जोईताराम को उपखंड मजिस्ट्रेट आहोर के समक्ष पेश किया गया और पाबंद की कार्यवाही की गई। मामले की जांच करने और दस्तावेज प्राप्त करने पर जोइताराम के बालक की स्कूल में पढ़ने बाबत माध्यमिक शिक्षा बोर्ड की अंक तालिका प्राप्त की गई। बोर्ड की अंक तालिका में उसकी जन्म तिथि 18 अप्रैल 2007 अंकित की हुई पाई गई। इस प्रकार जोइताराम के इस पुत्र की आयु 18 साल और कुछ दिन ही हो रही थी, जबकि विवाह करने के लिए लड़के की आयु 21 साल और लड़की की आयु 18 वर्ष पूरी होनी आवश्यक है।

खाद्य सुरक्षा विभाग की टीम ने 75 किलो नकली सरस घी पकड़ा

- **बहरोड़ की मैसर्स श्री श्याम सरस एजेंसी का मामला, फर्म पर सरस डेयरी का कोई रजिस्ट्रेशन नहीं मिला**
- **रजिस्ट्रेशन ना होने के बावजूद विभिन्न डीलरों से माल लेकर विक्रय करता था, प्रयोगशाला में नमूने भिजवाये**

कोटपूतली, (निसं)। राज्य सरकार द्वारा चलाये जा रहे विशेष अभियान के तहत आयुक्त खाद्य सुरक्षा एवं औषधि नियंत्रक व खाद्य सुरक्षा अतिरिक्त आयुक्त, एडीएम ओमप्रकाश सहारण तथा सीएमएचओ डॉ. आशीष सिंह शेखावत के निर्देशानुसार गुरूवार को बहरोड़ में मैसर्स श्री श्याम एजेंसी पर नकली सरस घी की होने की सूचना मिलने पर सैंपल कार्यवाही की गई।

उक्त दुकान में करीब 5 टीन नकली सरस घी करीब 75 किलो रखा हुआ था जिस पर जयपुर सरस डेयरी का पता था। जयपुर सरस डेयरी से वेरिफाई करने पर उन्होंने यह घी जयपुर सरस डेयरी का नहीं होना बताया। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि ये जो पीपे थे वह श्री श्याम एजेंसी के मालिक संतराम यादव ने किसी शादी की बुकिंग में देने के लिये मंगवाये थे। नकली सरस घी की डिलीवरी ग्राहक को देते हुये सरस डेयरी अलवर की टीम ने मौके पर पहुंचकर विभाग को इसकी सूचना दी।

सूचना मिलते ही खाद्य सुरक्षा अधिकारी नेहा शर्मा ने सरस घी का सैंपल लिया एवं सरस डेयरी की टीम से सरस घी के कॉपीराइट करने पर एफआईआर करने के लिये कहा। पूछताछ करने पर मालूम हुआ कि बहरोड़ की मैसर्स श्री श्याम सरस एजेंसी पर सरस डेयरी का कोई रजिस्ट्रेशन नहीं है। रजिस्ट्रेशन ना होने के बाद भी यह विभिन्न डीलरों से माल लेकर सरस ब्रांड का घी, दूध एवं पनीर काफी मात्रा में बेच रहा है। साथ ही उक्त नमूने को प्रयोगशाला जयपुर में भिजवाया जायेगा एवं जाँच रिपोर्ट आने पर नियमानुसार कार्यवाही की जायेगी।

राशिफल शुक्रवार 9 मई, 2025

पंडित अनिल शर्मा

वैशाख मास, शुक्ल पक्ष, द्वादशी तिथि, शुक्रवार, विक्रम संवत 2082, हस्त नक्षत्र रात्रि 12:09 तक, वज्र योग रात्रि 2:58 तक, बालवकरण दिन 2:57 तक, चन्द्रमा आज कन्या राशि में संचार करेगा।

ग्रह स्थिति: सूर्य-मेष, चन्द्रमा-कन्या, मंगल-कर्क, बुध-मेष, गुरू-वृष, शुक्र-मीन, शनि-मीन, राहु-मीन, केतु-कन्या राशि में।

आज रवियोग रात्रि 12:09 से आरम्भ होगा। आज प्रदोष व्रत है।

श्रेष्ठ चौघड़िया: चर सूर्योदय से 7:26 तक, लाभ अमृत 7:26 से 10:44 तक, शुभ 12:23 से 2:02 तक, चर 5:20 से सूर्यास्त तक।

राहूकाल: 10:00 से 12:00 तक। सूर्योदय 5:47, सूर्यास्त 7:00

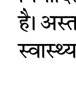

मेष
परिवार में चल रहे आपसी मतभेद समाप्त होंगे। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त-व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। स्वास्थ्य में सुधार होगा।

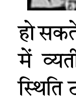

वृष
परिवार में शुभ-मांगलिक एवं महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। आज समय रचनात्मक कार्यों में व्यतीत होगा। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

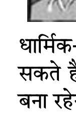

मिथुन
घर-परिवार में सुख-सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में धार्मिक-सामाजिक समारोह सम्पन्न हो सकते हैं। आज अतिथियों का आगमन बना रहेगा। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।

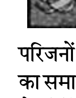

कर्क
परिवार में मन को प्रसन्न करने वाले संदेश प्राप्त होंगे। परिजनों के सहयोग से वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। परिवार में शुभ से संबंधित यात्रा संभव है।

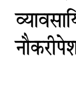

सिंह
आर्थिक मामलों में परेशानी का सामना करना पड़ सकता है। अनावश्यक धन खर्च हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों का प्रभाव-प्रभुत्व बढ़ेगा।

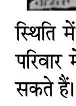

कन्या
व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता अभी बनी रहेगी। आर्थिक स्थिति में सुधार होगा। आय में वृद्धि होगी। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है।

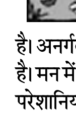

तुला
घर-गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। अनर्गल कार्यों में समय खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। व्यावसायिक परेशानियां अभी यथावत बनी रहेगी।

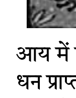

वृश्चिक
आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि हो सकती है। अटका हुआ धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक विवादों से राहत मिल सकती है।

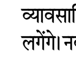

धनु
व्यावसायिक कार्यों को प्राथमिकता से करने का प्रयास करें। व्यावसायिक परेशानियां दूर होने लगेगी। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। नवीन कार्य योजना का क्रियान्वयन होगा।

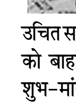

मकर
व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। नौकरीपेशा व्यक्तियों को बाहर जाना पड़ सकता है। परिवार में शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।

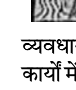

कुंभ
चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ कार्यों में व्यवधान हो सकता है। आज आवश्यक कार्यों में विलम्ब हो सकता है। बनते कार्य बिगड़ सकते हैं। यात्रा टालना ठीक रहेगा।

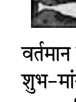

मीन
परिवार में आपसी सहयोग-समन्वय बना रहेगा। परिवार में वर्तमान समस्या का समाधान हो सकता है। शुभ-मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। व्यावसायिक/आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी।